भोपाल शहर की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन का अध्ययन

प्रकृति चतुर्वेदी[1], डॉ. सविता शर्मा[2]
[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत
[2]शोध निर्देशिका, शिक्षा संकाय, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

सांराश
प्रस्तुत शोधपत्र में भोपाल शहर के कामकाजी एवं गैरकामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन का अध्ययन किया गया। इस शोध कार्य में हमनें भोपल शहर के 05 विद्यालयों से 60 विद्यार्थियो को न्यादर्श के रूप में चुना है। जिसमें 30 कामकाजी एवं 30 गैरकामकाजी महिलाओं के बच्चों का समूह है। आंकड़ों के सकंलन के लिए उपकरण के रूप में ए.के. सिंह का समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से हमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैरकामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन मे सार्थक अन्तर होता है। तथा कामकाजी एवं गैरकामकाजी महिलाओं के बालकों एवं बालिकाओं के समायोजन मे भी सार्थक अन्तर होता है। इससे यह परिणाम प्राप्त होता है। कि कामकाजी महिलाओं के बच्चें समय से पूर्व समझदार, गंभीर तथा उत्तरदायी हो जाते है। प्रतिकूल परिस्थितयों में अकेले तथा आत्मविश्वास पूर्वक जूझने की दृढ़ता उनमें आ जाती है। तथा वह प्रतिकूल परिस्थितयों में भी अपने आप को समायोजित कर लेते है। बालिकाओं में बालकों की अपेक्षा आधिक समायोजन का गुण होता है।

मुख्यबिन्दुः– बालक एवं बालिकाऐं, कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चें, समायोजन ।

I प्रस्तावना

नवजात शिशु असहाय तथा असामाजिक होता है। वह न बोलना जानता है न चलना, फिरना। उसका न कोई मित्र होता है और न शत्रु। यही नहीं, उसे समाज के रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं का ज्ञान भी नहीं होता और न ही उसमें किसी आदर्श तथा मूल्य की प्राप्त करने की जिज्ञासा पाई जाती है। परन्तु जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है वैसे–वैसे उस पर शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रभाव प्रड़ता जाता है। इस प्रभाव के कारण उसका जहाँ एक और शारीरिक, मानसिक तथा संवेदगात्मक विकास होता जाता है वहाँ दूसरी और उसमें सामाजिक भावना भी विकसित होती जाती है परिणामस्वरूप वह धीरे–धीरे प्रोढ़ व्यक्तियों के उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक निभाने के योग्य बन जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि बालक के व्यवहार में वाच्छनीय परिवर्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है सच तो यह है कि शिक्षा से इतने लाभ है कि उसका वर्णन करना कठिन है। इन योगताओ का विकास उनमें उनके माता पिता की दी हुई शिक्षा से होता है। बच्चों की शिक्षा में उनके पिता से ज्यादा माता की भूमिका होती है। क्योंकि माता बच्चों की पहली गुरू होती है। इसलिए माताओं का कामकाजी या गैर कामकाजी होने से बच्चों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

II समायोजन का अर्थ

समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। समायोजन के द्वारा एक ओर तो हम अपने आपको बदलती परिस्थिति के अनुसार बदलने का प्रयत्न करते हैं तो दूसरी ओर समायोजन हमें ऐसी शक्ति आर सामर्थ्य भी देता है कि इन परिस्थितियो को ही बदल डालें।

गैटस, जेरसिल्ड एवं अन्य के अनुसार– "समायोजन एक ऐसी सतत् प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि उसे स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच ओर अधिक मधुर संबंध स्थापित करने में मदद मिल सके।"

III पूर्व शोध कार्य

द्विवेदी, एस.पी. एवं यादव, शिव मूर्ति (2015) ने किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर छात्र–छात्राओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होने अपने अध्ययन में न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 200 किशोर विद्यार्थियों जिनमें 100 छात्र तथा 100 छात्राओं का चयन 'प्रसम्भाव्यता प्रतिचयन' प्रक्रिया के अन्तर्गत आने वाली 'लॉटरी विधि' द्वारा किया है, इस शोध अध्ययन हेतु 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया है। उनके शोध के मुख्य उद्देश्य किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर छात्र–छात्राओं के दृश्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना। उन्होंने अपने अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया कि (1) किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर छात्र–छात्राओं के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। (2) किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर छात्रों का दृष्टिकोण सकारात्मक है। (3) किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर छात्राओं का दृष्टिकोण सकारात्मक है। अतः उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि किशोरावस्था में छात्र तथा छात्राओं की समस्याएं समान होती हैं। घर विद्यालय तथा समाज में समायोजन स्थापित करने में जितनी कठिनाई बालकों को होती है उतनी ही कठिनाई बालिकाओं को होती है। अतः किशोर उम्र की समस्याओं के समाधान हेतु निर्देशन की आवश्यकता बालक तथा बालिकाओं को समान रूप से होती है। निर्देशन सेवाओं की व्यवस्था करने के लिए लिंग के आधार पर उनमें भेद नहीं किया जा सकता है।

रामावतार, (2014) ने "विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों के व्यक्तित्व, समायोजन, मनोबल एवं कार्य संतोष का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर पी.एच.डी. स्तरीय शोधकार्य करते हुए निष्कर्ष में पाया कि राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों ने व्यक्तित्व के "आत्म सम्प्रत्यय, मिजाज एवं समायोजन" आयामों पर अधिक बल दिया जबकि विधि महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों ने "अर्न्तमुखी–बहिर्मुखी, आत्मनिर्भरता एवं दुश्चिंता" आयाम पर अधिक बल दिया। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण

एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों के व्यक्तित्व का स्तर लगभग समान होता है।

ढल्लौन और टंग (2010) ने किशोरों में परिवार एवं विद्यालय पर्यावरण के संदर्भ में समायोजन का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में 500 किशोर बालक एवं बालिकाओं को लिया जिसके लिए 250 बालक एवं 250 बालिकाएं थी जिनकी उम्र 15 से 21 वर्ष थी व स्कूल एवं कॉलेज से चुने गए उपकरण के प्रयोग के लिए स्टैन्बर्ग एवं सिलवर्ग 1986 द्वारा निर्मित भावनात्मक वातावरण, अनुसूची, मूस और भूस 1986 द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण अनुसूची, जोशी एवं व्यास द्वारा निर्मित 1997 कम्प कम वातावरण अनुसूची मित्तल (1974) क्षरा निर्मित समायोजन अनुसूची का उपयोग किया गया निष्कर्ष में पाया कि स्वतन्त्र पारिवारिक एवं विवादधीन वातावरण वाले किशोर की अपेक्षा संकीर्ण विचारधारा वाले पारिवारिक एवं विद्यालयीन किशोरों में निम्न स्तर का समायोजन पाया गया।

गारिया, (2012) "इफेक्ट ऑफ पेरेण्ट्स बिहेवियर आन द एडजस्टमेंट स्टेटस ऑफ स्टूडेण्ट्स" उपरोक्त शोध कार्य में छात्रों के समायोजन स्तर पर उनके माता पिता के व्यवहार के प्रभाव को जानने का प्रयास किया। शोध का मुख्य उद्देश्य माता पिता तथा बालकों के मध्य सम्बन्ध, माता–पिता द्वारा छात्रों को प्रदान की जाने वाली समायोजन सम्बन्धी जानकारी को जानना तथा उसका प्रभाव छात्रों के समायोजन स्तर पर ज्ञात करना था। शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में राजकीय विद्यालय, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड के कक्षा आठ के 143 छात्रों को चयनित किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु सिंह (1981) द्वारा निर्मित पेरेण्ट चाइल्ड रिलेशनशिप क्वैशचेनायर तथा मित्तल द्वारा निर्मित एडजस्टमेंट इन्वेटरी का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्षो के अनुसार उच्च एवं निम्न समायोजित छात्र अपने माता–पिता से प्रेमपूर्ण व्यवहार अधिक तथा प्रभुत्वपूर्ण व्यवहार कम अनुभव करते हैं। माता पिता का प्यार, सुरक्षा, दण्ड एवं अनुशासन सम्बन्धी व्यवहार छात्रों के समायोजन स्तर को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

IV अध्ययन के उद्देश्य

(क) उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ख) उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ग) उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं की बालिकओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

V शोध प्रविधि

(क) अध्ययन की परिकल्पनाएँः–

(i) उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(ii) उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(iii) उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं की बालिकओं के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(ख) अध्ययन का न्यादर्शः–

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भोपाल शहर के 5 विद्यालयों से 60 विद्यार्थियो को लिया गया। जिसमें 30 बालक तथा 30 बालिकाएँ है।

न्यादर्श (60)	
बालक	बालिका,**sa**
(30)	(30)

(ग) शोध विधिः–

प्रस्तुत समस्या "भोपाल शहर की कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन का अध्ययन।" के अध्ययन के लिये अनुसंधानकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जायेगा।

(घ) शोध कार्य में प्रयुक्त्व चरः–

(i) स्वतन्त्र चर – कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चें

(ii) आश्रित चर – समायोजन

(च) शोध कार्य में प्रयुक्त साख्यिकीः–

शोध कार्य में आंकडों के संकलन के पश्चात उनका परिणाम निकालने के लिए निम्न सांख्यिकी सूत्रों का प्रयोग किया गया।

(i) मध्यमान

(ii) मानक विचलन

(iii) टी टेस्ट

(छ) शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरणः–

आंकड़ों के सकलन के लिए उपकरण के रूप में ए. के. सिंह का समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया।

VI परिकल्पनाओं का विश्लेषण

परिकल्पना क्रमांक – 1

उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक 1.

उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
कामकाजी महिलाओं के बच्चें	30	92.9	18.9	7.90	सार्थक अन्तर है
गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चें	30	73.1	16.6		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन का मध्यमान 92.9 तथा गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन का मध्यमान 73.1 है। कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन का मानक विचलन 18.9 तथा गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन का मानक विचलन 16.6 है। यह दर्शाता है कि कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों कि विचलनशीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 7.90 है जो 0.01 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन मे सार्थक अन्तर होता है।

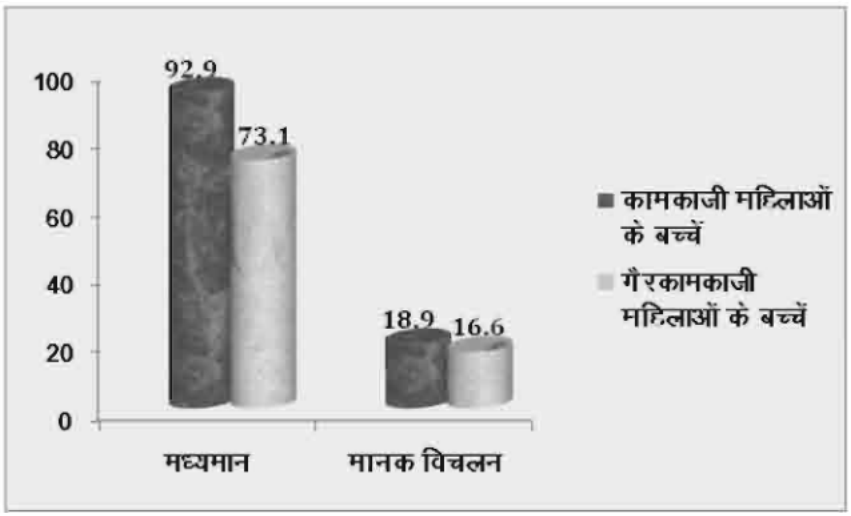

निष्कर्षः–

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन मे सार्थक अन्तर होता है।

परिकल्पना क्रमांक – 2

उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक : 2

उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन **के मध्य सार्थकता**

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
कामकाजी महिलाओं के बालक	15	75.5	14.08	4.01	सार्थक अन्तर है
गैर–कामकाजी महिलाओं के बालक	15	70.7	19.49		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन का मध्यमान 75.5 तथा गैर–कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन का मध्यमान 70.7 है। कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन का मानक विचलन 14.08 तथा गैर–कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन का मानक विचलन 19.49 है। यह दर्शाता है कि गैर–कामकाजी महिलाओं के बालकों कि विचलनशीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 4.01 है जो 0.01 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन मे सार्थक अन्तर होता है।

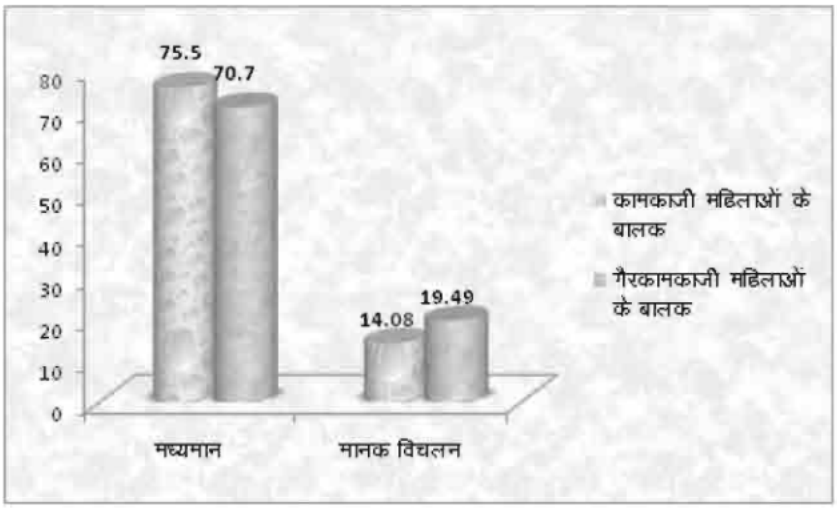

निष्कर्षः–

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन मे सार्थक अन्तर होता है।

परिकल्पना क्रमांक – 3

उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं की बालिकओं के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक : 3

उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं की बालिकओं के समायोजन के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
कामकाजी महिलाओं की बालिका	15	84.5	13.19	3.11	सार्थक अन्तर है
गैर–कामकाजी महिलाओं की बालिका	15	77.4	17.19		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं के समायोजन का मध्यमान 84.5 तथा गैर–कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं के समायोजन का मध्यमान 77.4 है। कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं के समायोजन का मानक विचलन 13.19 तथा गैर–कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं के समायोजन का मानक विचलन 17.19 है। यह दर्शाता है कि बालिकाओं कि विचलनशीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 3.11 है जो 0.01 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं के समायोजन मे सार्थक अन्तर होता है।

निष्कर्षः–
उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उच्च स्तर के कामकाजी एवं गैरकामकाजी महिलाओं की बालिकाओं के समायोजन मे सार्थक अन्तर होता है।

VII परिणाम

कामकाजी महिलाऐं अपने बच्चों के पालन–पोषण की उचित व उत्तम वैज्ञानिक विधियों को अपनाती है, जिसका प्रभाव भी बच्चों के व्यक्तित्व एवं पारिवारिक वातावरण पर पड़ता है। प्रायः नौकरी पेशा महिलायें उच्च शिक्षित होती है। इस कारण अल्प समय में ही वे अपने बच्चों को उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकती है। जिससे संतान में सही गलत की पहचान करने का विवेक होता है वहॉ इसके सकारात्मक प्रभाव भी देखे जा सकते है ऐसे बच्चे समय से पूर्व समझदार, गंभीर तथा उत्तरदायी हो जाते है। प्रतिकूल परिस्थितयों में अकेले तथा आत्मविश्वास पूर्वक जूझने की दृढ़ता उनमें आ जाती है। तथा वह प्रतिकूल परिस्थितयों में भी अपने आप को समायोजित कर लेते है। बालिकाओं में बालकों की अपेक्षा आधिक समायोजन का गुण होता है।

VIII सुझाव

(क) गैर–कामकाजी महिलाओं को अपने बच्चों में समायोजन के स्तर को बढ़ाने के लिये पारिवारिक वातावरण में बदलाव की आवश्यकता हैं।

(ख) गैर–कामकाजी महिलाओं को अपने बच्चों में अधिक से अधिक आत्मविश्वास की भावना जागृत करना चाहिए।

(ग) गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। कि वह अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता हो। जिससे उन्मे प्रतिकूल परिस्थितयों में भी अपने आप को समायोजित कर पाने की क्षमता हो।

(घ) गैर–कामकाजी महिलाओं को अपने बच्चों के पालन–पोषण में रूढ़ीवादी मानसिकता में परिवर्तन करना चाहिए। तथा बच्चों के पालन–पोषण में उचित व उत्तम वैज्ञानिक विधियों को अपनाना चाहिए। जिसका प्रभाव भी उन्के समायोजन पर पता पड़ता है।

(च) गैर–कामकाजी महिलाओं को अपने बच्चों में व्याप्त विभिन्न प्रकार के असंतोषों को जानने तथा विचार विमर्श द्वारा इनको दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] अग्रवाल, संध्या (2008). ''शिक्षा मनोविज्ञान'' अनुप्रकाशन जयपुर।

[2] गैरट ई. हैनरी (1966). ''शिक्षा और मनोविज्ञान में सासंख्यिकी के प्रयोग'' कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।

[3] गुड बी.सी. (1973). ''डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन'' नेग्रा हिट बुक कै. न्यूयार्क।

[4] गुप्ता. एच.पी. (2005). ''सांख्यिकीय विधि'' शारदा पुस्तक भवन इलाहाबद।

[5] नरूला, संजय (2007). ''रिसर्च मैथडोलाजी ''स्वरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली।

[6] पाठक पी.डी. (2005). ''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

[7] ढिल्लौन और टंग (2010). ''किशोरों में परिवार एवं विद्यालय पर्यावरण के संदर्भ में समायोजन का अध्ययन ''जनरल ऑफ साइॅकोलाजी रिसर्च, जनवरी से अगस्त वाल्यूम 54।

[8] द्विवेदी, एस.पी. एवं यादव, शिव मूर्ति (2015). किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर छात्र–छात्राओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन। एशियन जरनल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, आई.एस.एस.एन.: 2347–4947, वॉल्युम नम्बर V, इश्यू–1।

[9] कुल्हरी, रामावतार (2014). विभिन्न संकायों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर, आत्मविश्वास एवं नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन। पी–एच.डी. शोध–प्रबन्ध, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय, गॉधी विद्या मन्दिर सरदारशहर।